खाडा। १६ ॥ भा की की की हैं हैं ही

निजवीजं बीजं 'लज्वाबीजं ग्राति:। वर्ण-न्यासादि दिचणावत । ध्यानन्त ।

'खड़ा द्वित्रेन्द् खण्डसवदस्तरसाप्नाविताङ्गी विनेवा।

सब्ये पाणी कपालोइलद एजमयो मृत्रकेशी

पिबन्ती। दिग्वस्तावदकाचीमणिमयम् कटार्यर्थतां दीप्त-

पायात्रीलोत्पलाभा रविश्रशिविसतक्षण्डला-

लीढपादा ॥" एवं ध्याता दिचणावत सर्वे कार्यम्। पुषर-यन्त एकविंग्रतिमहस्रजपः ॥ शा की की की की ३॥ ॥ जी जी जी खादा। ५॥ भी जी को को फट खाडा। ६॥ शा की की को कीं कीं कीं खाहा। दाशा एँ नस:। कीं एँ नमः। क्रौँ कालिकायै खाद्वा। १४॥ ॥ एतस्याः पूजाप्रयोगः । अस्य दिच्या सूर्ति-ऋषिः पंतिच्छन्द्रः कालिका देवता । ध्यानन्तु "चतुर्भजा क्रणावर्णा मुख्डमालाविभूषिता। खन्न टिचिणे पाणी विभातीन्दीवरद्वयम ॥ कर्त्तञ्च खर्परञ्जेव क्रमादामन विभ्रती। द्यां लिखन्तीं जटामेकां विभ्रती शिरसाइयी॥ मुख्डमालाधरा शीर्षे ग्रीवायामय चापराम्। वसमा नागहारच विश्वती रक्तलीचना॥ क्षणावस्त्रधरा कळां व्याघ्राजिनसमितता। बामपादं शवद्वदि संख्याप्य दिचणं पदम्॥ विलाप्य सिंइपृष्ठे त् लेलिहाना शवं खयम्। साइहासा महाघोररावयका सभीषणा॥" ध्यानमेवं अन्यत सर्व्वं दिचणावत् । पुरस्ररणं बचह्यजपः । श्रन्थासां मन्त्रवर्णसंख्यबच-जपः॥ ॥ की इते इते दिचिए कालिकी खाइ। ॥११॥ की इं क्री दिचिए कालिके फट। १०॥ भा की की इं इं को की दिविणे कालिके की की हैं हैं ही ही खादा।२० एतामां दिच्या मूर्तिऋषिः पंतिच्छन्दो दिच्य कालिका देवता । यन्यतं सर्वे दिचणावत ॥ *। कीं खादा ३। भैरवोऽस्य ऋषि: ॥*॥ कीं की हैं हैं ही हो खादा। या * ॥ जी हं ही बाहा।५। यस पचवक्क ऋषिः॥॥॥ कीं कीं कों हं हों हीं खादा। ८॥ की दिच्यो कालिके खाडा। ८॥ शा की ॥ हं ही की हं ही खाडा। द॥ शा की क्रों क्रं खंखाहा। १६॥ शा नमः एँ की की कालिकाय खाडा। ११॥*॥ नमः जा यां कों कों फट् खादा कालि कालि क्रं। १८ ॥ ॥ एतासां ऋषादिकं पुजादिकञ्च दिवापावत । प्रयर्गं सवजपः ॥ ॥ यय ग्राकालिकामन्ताः। की की की छ छ की की गुद्ध कालिक की की की है है क्री की खादा। २१ ॥ श्री हैं की गुद्ध कालिके की की हैं हैं ही ही

क्री गृद्धों कालिके खाहा। १४ ॥ भा की हं को गुद्धे कालिके हाँ हाँ की की खाडा। १४ ॥ भा औं हैं हो दिविणे कालिके हैं हैं ही ही खाहा। १५॥॥ क्षं क्रों गृह्ये कालिके कीं कीं हैं हैं कीं क्री बाहा १५॥ *॥ की गद्यों कालिके क्रौँ खाडा। ८॥ ॥ क्रौँ दचिणे कालिके की साहा। १०॥ ॥ एतासां सर्वं पूर्ववत। बलिमन्त्रस्त । एद्ये हि जगन्यातर्ज्ञगतां जननि ग्रह्म गरह सम बिलं सिद्धिं टेहि टेहि श्रवच्यं कुर कुर क्रूं क्रूं की की फट् फट् अं कालि कार्य नमः फट खाडा ॥*॥ यदा गुहाकाल्या चयं मन्तः। एद्योहि गुद्धकालि मम बलिं ग्रह्ण रा सम श्रवन नाग्य नाग्य खादय खादय स्म र स्म र क्रिन्धि किन्धि सि डिंडे दे डि क्रं फट् खाद्या ॥ ॥ यथ भद्रका खादिमन्ताः को की की हैं हैं ही हो भद्रवाली की की की हैं हैं हैं हैं से खाहा।२०। *॥ कीं कों कें हैं हैं ही समानकालि की की का इंड की को खादा।२१॥॥ की की की हैं हैं ही ही महाकालि को को को इं इं को का खाहा।२०॥।॥ एतासां पुजादिकं दिचणावत । ध्यानन्त । "महामेघप्रभां देवीं कृषावस्त्रपिधायिनीम। ललजिहां घोरदंष्ट्रां कोटराचीं इसक्यखीम ॥ नामहारलतोपेतां चन्द्राईक्षतशिखराम। द्यां लिखन्तीं जटामेकां लेलिहानां ग्रवं खयम॥ नागयज्ञोपवीताङ्गीं नागश्रयानिषद्षीम । पञ्चाश्रक्ष्युक्षवनमालां महोदरीम ॥ सहस्रफणसंयुत्तमनन्तं शिरसीपरि। चतुर्दिन्तु नागपणाविष्टितां गुच्चकालिकाम्॥ तचक्रपराजेन वामकङ्गणभूषिताम्। यनन्तनागराजेन सतदचिषवङ्गणाम ॥ नागेन रसनाचारकल्पितां रतन्प्राम । वामे शिवस्बरूपन्तं कल्पितं वस्तरूपकम् ॥ दिभुजां चिन्तयेहे वीं नागयन्त्रीपवीतिनीम। नरदेइसमाबदकुग्डलश्रुतिमग्डिताम्॥ प्रसन्नवदनां सीम्यां नवरत्नविश्विताम। नारदाखेमा निगणैः सेवितां शिवसोहिनीम। साइहासां महाभीमां साधकाभीष्टदायिनीम॥ गुद्धकाली इत्यपलच्यमं ॥ शाभद्रकालीयन्ता-"प्रसादबीजमुब्ख कालीति पदम्बरत। महाकालीपदं चोक्का किलियुग्मं ततः परम ॥ यस्त्रमग्निप्रयान्तोऽयं भद्रकास्त्रा महामनुः॥

ॐ कालि महाकालि किलि किलि फट खाहा ॥*॥ ध्यानं यथा.—

"चतुचामा कोटराची मसिमलिनमुखीं मुक्तकेशी बदन्ती

नाइं द्वरा वदन्ती जगदिखलिमदं ग्रासमेकं वारोमि। इस्ताभ्यां धारयन्ती ज्वलटनलिश्वासित्रभं

दन्तेर्ज्ञम्ब्यम्लाभैः परिचरत् भयं पात् मां भद्रकाली ॥"

प्रस्थाः पुरुषरणादिकं दिच्चणकालीतन्त्रवत । इति केचित ॥ वस्ततस्त प्रस्थरणसृष्टीत्तर-सहस्रजपः । इति क्षणानन्दक्षततन्त्रसारः ॥*॥ श्मशानकालीमन्तादिकं तच्छव्दे दृष्ट्यम ॥*॥

श्रथ दौपन्विताध्यामापुजा । यामले । "कात्तिके सामि लेषायां पञ्चद्रश्यां सहानिशि पज्येत योऽतियत्नेन काली विद्या प्रसीटित ॥ म्रामयीं प्रतिमां कला महाकालीं प्रपृज्येत ।" व्योमकेश्रमंहितायाम ।

''तुलार्को यस्त्रमावास्यां निगार्डे घोरटचिगाम पुजरीदिधिवद्वत्वा सर्व्यसिदीखरी भवेता"द्रिति। एवच्च ग्रईरात्रं पूजाया मुख्यकालः। स च काली यदा भयदिने तदा पूर्वदिने पूजा। यथ तत्वेव ।

"त्रवोभयदिन शस्त्रकाले भूतवृता यदि। उमा माहे खरी सा च तिथि: सिंडिपदा

. सताम ॥

विल्टानं विलितियावात्मनाश्वकरं परम। ततस्तव न कर्त्त्वं बिलदानविसर्कने॥ मन्वसिंडिकरं तव परेडिंड जपसाधनम । रात्री पूजा प्रकर्त्त्र्या रात्राविव विसर्जनम्। प्रकाशे सिडिङानि: स्याद्रीपने सिडिकत्तमा ॥" तथा कालीकला।

"तुलार्के बहुले पचे पचदच्यां महेम्बरीम्। यथोपचारै: संपुच्य सञ्चानिशि तृपो भवेत्। यनिभौमदिने चेत स्थात्ततः यतगुर्वं फलम् ॥ तचोभयदिने भूतयुक्तकुद्धां महानिशि॥ इसां यात्रां कारियता चक्रवर्त्ती भवेत्र पः ॥"

महेखरीं दिच्यकालीं तत्प्रकरणोक्तवात्॥*। कार्त्तिकासावास्यायां कालीपूजाहेत्मा इ विश्व-सारे।

"कात्ति के क्षणपचेत पश्चरश्चां महानिशि। षाविर्भता महाकाली योगिनीकोटिभिः

यतोऽव पूजनीया सा तिसन्दिन मानवैः। विजयजादिकं सब्दें नियायां क्रियते तु यत । तत्तदचयतां याति काली विद्या प्रमीदति ॥" महानिशि चर्तराते। तथा च उत्तरकामाच्या-तन्त्रे ।

"श्रतकार्के व देवेशि दीपयाचादिनेऽपि च। श्रमावास्यां समासाद्य मध्यराती विचचणः॥ स्रामयों पुत्तलीं क्रता दीपादिभिरलङ्गताम्। बलिं नानाविधं दद्यात् वाद्यभाग्डसमन्वितम् ॥ नृत्यगीतं कीतुकच्च यावत् सूर्योदयं भवेत्। प्रातःकाले ग्रहतोये स्थापयेदरिनाभिनीम ॥"

एतेनास्या दीपयात्राप्यर्डरात्रे बीध्या। प्राविः